अध्याय – पंचम

सार, निष्कर्ष तथा सुझाव

अध्याय–पंचम

सार, निष्कर्ष तथा सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

शैक्षिक विकास के क्रम में प्रारंभिक बाल शिक्षा का विशेष महत्व है प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के संदर्भ में इसका विशेष स्थान है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए उद्दीपित परिस्थितियाँ प्रदान करती है। यह बालक को घर के अनौपचारिक परिवेश से विद्यालय के औपचारिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में मदद करती है। आर्थिक दबाव के कारण माता–पिता दोनो कार्यरत होते है ऐसी स्थिति मे बच्चे को कई घंटे अकेले बिताने पड़ते हैं जो बच्चे मे नकारात्मक भाव पैदा कर सकते है। इस परिस्थिति में यह पूर्व प्राथमिक विद्यालय बच्चों की शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करती है। जिसके फलस्वरूप उसमें विद्यालय तत्परता का विकास होता है।

5.2 समस्या कथन :–

''प्रारंभिक बालशिक्षा (ई.सी.ई.) कार्यक्रम के वर्तमान पदृिश्य पर एक अध्ययन।''

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1) झाँसी शहर के पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की भौतिक संरचना तथा सुविधाओं का अध्ययन करना।
2) इन पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों तथा सामग्री का अध्ययन करना।
3) इन पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की योग्यता का अध्ययन करना।
4) पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों में प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
5) पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली शैक्षिक विधि का अध्ययन करना।
6) पूर्व प्राथमिक विद्यालयों मे होने वाली शैक्षिक क्रियाओं तथा कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
7) पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

5.4 अध्ययन विधि :–

1 **न्यादर्श** – प्रस्तुत अध्ययन के लिए चुने गए न्यादर्श में झांसी शहर के 10 पूर्व प्राथमिक विद्यालय शामिल किए गए है।

2 **उपकरण** – प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित तीन उपकरणों का निर्माण किया गया है –

1. अवलोकन अनुसूची
2. प्रश्नावली (विद्यालय प्रमुख/प्रशासक के लिए)
3. प्रश्नावली (शिक्षकों के लिए)

इन उपकरणों द्वारा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में न्यूनतम विशिष्टताओं की उपलब्धता, पाठ्यक्रम क्रियाओं तथा प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन किया गया।

3 **अध्ययन विधि** – प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण है। जिसमें झाँसी शहर के प्रारंभिक बाल शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य को जानने का प्रयास किया गया है।

5.5 प्रदत्त संकलन :–

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित प्रदत्त संकलित करने के लिए शोधकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का भ्रमण किया। जिसके लिए अध्ययनकर्ता ने विद्यालय प्रमुख से अवलोकन अनुसूची तथा प्रश्नावली के लिए प्रशासन हेतु अनुमति प्राप्त की।

यह प्रश्नावली शिक्षकों के लिए तथा प्रशासकों के लिए पृथक–पृथक थी। इन प्रश्नावलियों में पूर्व प्राथमिक विद्यालय की न्यूनतम विशिष्टताओं को जानने से संबंधित एकांश शामिल थे। शिक्षकों तथा प्रशासकों से सत्य तथा निःसंकोच प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अनुरोध किया। अवलोकन अनुसूची के लिए अध्ययनकर्ता ने स्वयं विद्यालय की कक्षाओं का भ्रमण किया तथा क्रियाओं को अनुसूची मे लिखा परन्तु समय अभाव के कारण कक्षा में शिक्षकों द्वारा कराई जाने वाली क्रियाओं को सीधे शिक्षकों से पूछ कर अवलोकन अनुसूची मे लिख लिया गया।

इन उपकरणों से प्राप्त जानकारी को एकत्रित करके तालिका बद्ध कर विश्लेषण कर इसकी व्याख्या की गई। प्रदत्तों के विश्लेषण तथा व्याख्या का वर्णन चतुर्थ अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

5.6 प्रमुख निष्कर्ष :–

1) 30% पूर्व प्राथमिक विद्यालय एन.सी.ई.आर.टी. के इस मानदण्ड की पूर्ति करते थे जिसके अनुसार, वाहन सुविधा के बिना विद्यालय बच्चों के घर से 1/2 से 1 कि.मी. तथा वाहन सुविधा के साथ 1 से 8 कि.मी. के दायरे में होना चाहिए।
2) 90% विद्यालय बच्चों को सुरक्षा प्रदान करते थे।
3) 60% विद्यालयों मे बच्चों के खेलने के लिए मैदान का आकार मानदण्डों के अनुसार नहीं था।
4) 60% विद्यालयों मे बच्चों को अधिकांश भौतिक सुविधाएँ जैसे –
वॉल स्पेस, स्टोर रूम, सोने की व्यवस्था, वरान्डा, पीने का स्वच्छ पानी, प्रसाधन सुविधा आदि प्रदान की जा रही थी।
5) 80% विद्यालयों में बच्चों के मांसपेशीय तथा शारीरिक विकास के लिए गेंद, फिसने उपलब्ध थे तथा विद्यालय मे पी.टी. व खेलकूद कराए जाते थे।
6) 80% विद्यालयों में बच्चों के सोचने की क्षमता के विकास हेतु ब्लाक बनाना तथा कहानियों का उपयोग किया जाता था।
7) 60–70% विद्यालयों में बच्चों के भाषा विकास तथा आत्म अभिव्यक्ति के विकास हेतु गीत व कविता का उपयोग किया जाता था।
8) 80% विद्यालयों में वाचन हेतु अक्षर–ज्ञान पर तथा लेखन क्रिया पर जोर दिया जाता था।

9) 30% विद्यालयों मे बच्चों में ज्ञानेन्द्रिय संवेदना विकास के प्रति शिक्षक जागरूक थे।

10) बच्चों के उचित स्वास्थ्य तथा पोषण के लिए 60-70% विद्यालयों में शिक्षक बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी बातों के बारे में बताते थे तथा अभिभावकों को भोजन संबंधी सलाह देते हैं। किसी भी विद्यालय में पूरक आहार प्रदान नहीं किया जाता।

11) बच्चों में नेत्र हाथ समन्वय, कलात्मक तथा सृजनात्मकता विकास के लिए चित्र बनाने तथा रंग भरने की क्रियाएँ कराई जाती थी।

12) 50-60% विद्यालयों में सामूहिक खेल व टिफिन शेयरिंग क्रियाओं द्वारा बच्चों के सामाजिक तथा भावनात्मक विकास किया जाता था।

13) 40% विद्यालयों मे शिक्षक नियुक्ति की न्यूनतम योग्यता नर्सरी टीचर ट्रेनिंग निर्धारित थी।

14) 70% विद्यालयों में शिक्षक छात्र अनुपात 1:25 था।

15) 30% विद्यालयों के शिक्षक प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य, कार्यो तथा बाल विकास मे इसकी भूमिका के बारे में जागरूक थे।

16) सभी विद्यालयों मे प्रतिमाह शिक्षक अभिभावक सभा का आयोजन किया जाता था।

17) कहानी, गीत-कविता तथा खेल पद्धति का उपयोग लगभग सभी विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किया जाता था।

18) 80% विद्यालयों मे बच्चों के मूल्यांकन के लिए औपचारिक लिखित तथा मौलिक परीक्षाओं का आयोजन होता था।

19) 60% विद्यालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में शिक्षण कार्य किया जाता था परन्तु सभी 10 विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा पर अधिक जोर दिया जाता था जबकि बच्चों की मातृभाषा हिन्दी थी।

20) 50% विद्यालयों में प्रत्येक माह मूल्यांकन किया जाता था।

5.7 सुझाव :-

1) पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

2) पूर्व प्राथमिक विद्यालयों मे अभी भी वाचन, लेखन पर जोर दिया जाता है। इसे हटाया जाना चाहिए।

3) विद्यालयों में अधिगम सामग्री की मात्रा बढ़ाई जानी चाहिए।

4) बच्चों को स्वयं सीखने के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए।

5) अभिभावकों की सहभागिता बढ़ाई जानी चाहिए।

6) बच्चों को मूल्यांकन औपचारिक परीक्षाओं द्वारा नहीं किया जाना चाहिए।

7) बाल शिक्षा कार्यक्रम के गुणात्मक स्तर में सुधार हेतु संगठन निर्मित होना चाहिए जो इन विद्यालयों के कार्यक्रम का पर्यवेक्षण कर इसमें समरूपता ला सके।

5.8 भावी अध्ययन हेतु सुझाव :-

1) न्यादर्श का आकार बड़ा कर विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन।

2) खेल पद्धति और बाल-विकास के संदर्भ में पूर्व प्राथमिक शिक्षको की जागरुकता तथा क्रियाशीलता का अध्ययन।

3) प्राथमिक शिक्षा पर पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

4) बच्चों के अधिगम पर किसी विशेष खेल क्रिया के प्रभाव का अध्ययन।